पत्र सूचना शाखा
(मुख्यमंत्री सूचना परिसर)
सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उ0प्र0

मुख्यमंत्री ने उ0प्र0 संगीत नाटक अकादमी के 63वें स्थापना दिवस पर आयोजित 'धरोहर' कार्यक्रम को सम्बोधित किया

उ0प्र0 संगीत नाटक अकादमी में मानव संसाधन की कमी को दूर करने के निर्देश, एक बोर्ड अथवा समिति गठित कर चयन प्रक्रिया पूरी की जाए

अकादमी की 06 दशकों से अधिक की यात्रा प्रदेश की संगीत, नृत्य और नाट्य परम्पराओं को सहेजने तथा आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण प्रयास : मुख्यमंत्री

उ0प्र0 में ओ0डी0ओ0पी0 और ओ0डी0ओ0सी0 की तर्ज पर 'एक जनपद–एक कला' (ओ0डी0ओ0ए0) कार्यक्रम को भी प्राथमिकता के साथ आगे बढ़ाने की आवश्यकता

संगीत नाटक अकादमी, भारतेंदु नाट्य अकादमी, बिरजू महाराज कथक संस्थान, राज्य ललित कला अकादमी तथा अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं को प्रदेशभर के कलाकारों को एक मंच पर लाने का प्रयास करना चाहिए

प्रदेश के विभिन्न शहरों और जनपदों में उपयुक्त सार्वजनिक स्थान या चौराहे पर कलाकारों की प्रस्तुतियां आयोजित करने का प्रयास हों

अवध संध्या, घराना कार्यक्रम, नमन, यादें और पुष्पांजलि जैसे आयोजनों ने मूर्धन्य कलाकारों की स्मृतियों को सम्मान देने के साथ नई प्रतिभाओं को मंच प्रदान किया

संस्थान ने अपनी गतिविधियों को केवल लखनऊ के सभागारों तक सीमित न रखकर प्रदेश के सभी अंचलों तक पहुंचाने का प्रयास किया

उ0प्र0 सरकार वरिष्ठ कलाकारों के सम्मान, लोक कलाकारों के संरक्षण और युवा प्रतिभाओं को अवसर उपलब्ध कराने के लिए निरन्तर कार्य कर रही

प्रधानमंत्री जी ने आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर देशवासियों को अपनी विरासत पर गर्व करने का मंत्र दिया

योग, आयुर्वेद, भारतीय संगीत, नृत्य और पारम्परिक कलाएं भारत की वैश्विक पहचान तथा सॉफ्ट पावर का महत्वपूर्ण आधार बन रही

उ0प्र0 ने प्रधानमंत्री जी के विजन को विकास और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के माध्यम से धरातल पर उतारने का प्रयास किया

अयोध्या में दीपोत्सव हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं को भव्यता के साथ दुनिया के सामने प्रस्तुत करने का माध्यम बना

उ0प्र0 संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष ने अकादमी पुरस्कारों की धनराशि में वृद्धि को स्वीकृति प्रदान करने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया

लखनऊ : 13 नवम्बर, 2026

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी की 06 दशकों से अधिक की यात्रा प्रदेश की संगीत, नृत्य और नाट्य परम्पराओं को सहेजने

तथा आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण प्रयास है। संस्थान ने अपनी गतिविधियों को केवल लखनऊ के सभागारों तक सीमित न रखकर प्रदेश के सभी अंचलों तक पहुंचाने का प्रयास किया है। प्रदेश सरकार संगीत, नृत्य, नाट्य और लोककलाओं की समृद्ध परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी को पूरा सहयोग प्रदान करेगी। प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और संवर्धन सामूहिक जिम्मेदारी है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी आज यहां उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के 63वें स्थापना दिवस पर आयोजित 'धरोहर' कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कार्यक्रम स्थल पर आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा वाद्य यंत्रों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की। मुख्यमंत्री जी ने विभिन्न कलाकारों की प्रस्तुतियों का अवलोकन किया तथा उन्हें सम्मानित किया। कार्यक्रम में अकादमी की यात्रा पर आधारित एक लघु फिल्म भी प्रदर्शित की गयी।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार वरिष्ठ कलाकारों के सम्मान, लोक कलाकारों के संरक्षण और युवा प्रतिभाओं को अवसर उपलब्ध कराने के लिए निरन्तर कार्य कर रही है। कलाकारों को मानदेय, वरिष्ठ प्रतिभाओं को उत्तर प्रदेश गौरव सम्मान तथा विभिन्न सांस्कृतिक मंचों के माध्यम से लोक एवं शास्त्रीय कलाकारों को अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। भारत में संगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मा की अभिव्यक्ति और परमात्मा की आराधना का सशक्त माध्यम रहा है। भारतीय मनीषा ने संगीत को साधना, आध्यात्मिक चेतना और जीवन के अनुशासन से जोड़ा है।

हमारी संगीत परम्परा का प्रारम्भ प्रणव ओंकार और नाद की ध्वनि से माना गया है। भगवान शिव के डमरू से निकले 14 माहेश्वर सूत्रों को वर्णमाला, भाषा और की उत्पत्ति से जोड़ा जाता है। संस्कृत और तमिल भाषाओं की परम्पराओं में भगवान शिव को ध्वनियों की उत्पत्ति का आधार माना गया है। कहीं उन्हें लोकमंगल के देवता, कहीं आदिनाथ और कहीं नटराज के रूप में आराध्य माना गया है। माँ सरस्वती की वीणा और योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण की बांसुरी भी संगीत के उसी आध्यात्मिक स्वर से जुड़ी हैं, जो सम्पूर्ण चराचर जगत में नाद के रूप में व्याप्त है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि महर्षि भरत के नाट्यशास्त्र से लेकर आधुनिक रंगमंच तक भारतीय कला और संगीत की समृद्ध परम्परा रही है। उत्तर प्रदेश भारत की आत्मा है। यहां की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, संगीत, नृत्य, नाट्य और लोककलाओं ने भारतीय संस्कृति को विशिष्ट पहचान प्रदान की है। लखनऊ, बनारस, आगरा, किराना, रामपुर–सहसवान, शाहजहांपुर और इटावा जैसे संगीत घरानों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को अलग–अलग रंग, शैली और पहचान प्रदान की है। पं0 बिरजू महाराज और गुरु लच्छू महाराज जैसे महान

गुरुओं ने कथक को वैश्विक मंच पर नई ऊंचाइयां प्रदान कीं। पद्म विभूषण से सम्मानित गिरिजा देवी की ठुमरी और बेगम अख़्तर की ग़ज़ल गायकी ने उत्तर प्रदेश की संगीत विरासत को अन्तरराष्ट्रीय पहचान दिलाई।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि ध्रुपद, ठुमरी, दादरा, टप्पा, कजरी, चैती और होरी जैसी, संगीत विधाएं हमारी सांस्कृतिक विविधता की परिचायक हैं। उत्तर प्रदेश की लोककलाओं की परम्परा अत्यंत समृद्ध है। ब्रज की रासलीला और संकीर्तन, अवध की रामलीला, पूर्वांचल का बिरहा, कजरी और सोहर तथा बुन्देलखण्ड का आल्हा और राई हमारी सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण अंग हैं। नौटंकी, स्वांग और लोकनाट्य परम्पराओं ने पीढ़ियों तक मनोरंजन के साथ समाज को शिक्षा, संस्कार और जीवन की सीख देने का कार्य किया है।

भारतीय कला परम्परा की सबसे बड़ी विशेषता उसकी गुरु–शिष्य परम्परा है। गुरु अपने शिष्य को केवल सुर, ताल, भाव और अभिनय की तकनीक नहीं सिखाता, बल्कि जीवन का अनुशासन, धैर्य, समर्पण और साधना का संस्कार भी प्रदान करता है। बिना समर्पण के किसी भी क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्त नहीं की जा सकती। मंच पर कलाकार भले ही अकेला दिखाई देता हो, लेकिन उसकी प्रस्तुति के पीछे वर्षों का अभ्यास, गुरु का आशीर्वाद और पीढ़ियों का अनुभव होता है। यही अनुभव गुरु से शिष्य और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचता है तथा अभिनय और कला की प्रस्तुतियों के माध्यम से समाज के सामने अभिव्यक्त होता है।

किसी राष्ट्र को लम्बे समय तक गुलाम बनाए रखना हो, तो उसकी संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया जाता है। भारत ने भी ऐसे अनेक षड्यंत्रों और विपरीत परिस्थितियों का सामना किया है। लोककला और लोकगाथाओं ने भारत की आत्मा को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दुनिया की अनेक सभ्यताएं और संस्कृतियां समय के साथ समाप्त हो गईं, लेकिन भारत आज भी अपनी हजारों वर्ष पुरानी सांस्कृतिक यात्रा को निरन्तर आगे बढ़ा रहा है। भारत की सनातन संस्कृति का भाव न तलवार से मिटाया जा सकता है और न मानसिक गुलामी के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है। हमारी लोक परम्पराओं और लोक संस्कृति ने भारत की पहचान, आत्मसम्मान और सांस्कृतिक गौरव को पीढ़ी–दर–पीढ़ी सुरक्षित रखा है। यही हमारी सांस्कृतिक आत्मा की वास्तविक शक्ति है।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आजादी के बाद भी अनेक लोककलाएं, पारम्परिक वाद्य यंत्र और सांस्कृतिक विधाएं अपेक्षित संरक्षण एवं प्रोत्साहन से वंचित रहीं। लोक कलाकारों को पर्याप्त मंच नहीं मिल पाया और संस्कृति का दायरा कुछ चुनिंदा आयोजनों तक सीमित होता गया। हमें समझना होगा कि जब कोई लोकधुन समाप्त होती है तो उसके साथ केवल संगीत की

एक विधा नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र की स्मृतियां, परम्पराएं और पीढ़ियों का अनुभव भी लुप्त हो जाता है। संस्कृति की उपेक्षा का अर्थ अपनी पहचान के महत्वपूर्ण अध्यायों को खो देना है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर देशवासियों को अपनी विरासत पर गर्व करने और विकास के साथ सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जागरण का मंत्र दिया था। विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए हमें अपनी हजारों वर्ष पुरानी विरासत के प्रति गौरव का भाव रखना होगा। आज भारत आर्थिक शक्ति के रूप में आगे बढ़ रहा है और अपनी सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से दुनिया को आकर्षित कर रहा है। योग, आयुर्वेद, भारतीय संगीत, नृत्य और पारम्परिक कलाएं भारत की वैश्विक पहचान तथा सॉफ्ट पावर का महत्वपूर्ण आधार बन रही हैं।

विगत साढ़े 09 वर्षों में उत्तर प्रदेश ने प्रधानमंत्री जी के इसी विजन को विकास और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के माध्यम से धरातल पर उतारने का प्रयास किया है। एक ओर प्रदेश में एक्सप्रेस–वे, एयरपोर्ट, औद्योगिक गलियारों, डेटा सेण्टर और ए0आई0 सिटी के माध्यम से 21वीं सदी के आधुनिक उत्तर प्रदेश का निर्माण किया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर काशी, अयोध्या, मथुरा और ब्रज क्षेत्र जैसे सांस्कृतिक केन्द्रों को पुनर्स्थापित कर उन्हें सांस्कृतिक चेतना के केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है।

हाल ही में अयोध्या में आयोजित दीपोत्सव ने पूरी दुनिया का ध्यान आकर्षित किया। दीपोत्सव हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं को भव्यता के साथ दुनिया के सामने प्रस्तुत करने का माध्यम बना है। अयोध्या में दीपोत्सव के आयोजन के दौरान पूरी दुनिया की निगाहें उत्तर प्रदेश पर केन्द्रित होती हैं। आगामी 24 नवम्बर को कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर काशी में देव दीपावली का आयोजन होगा। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर भगवान श्रीराम के भव्य मन्दिर का निर्माण, काशी में श्री काशी विश्वनाथ धाम, माँ विंध्यवासिनी कॉरिडोर का निर्माण और नैमिषारण्य की सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने के प्रयास इसी सांस्कृतिक पुनर्जागरण की कड़ी हैं।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि अकादमी द्वारा प्रदेश के समस्त 75 जनपदों में ग्रीष्मकालीन कार्यशालाओं का आयोजन नई पीढ़ी को कला से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इसी प्रकार 24 केन्द्रों पर शास्त्रीय एवं सुगम संगीत की प्रतियोगिताओं के आयोजन से प्रतिभाओं की पहचान और उन्हें प्रोत्साहित करने का अवसर मिला है। अवध संध्या, घराना कार्यक्रम, नमन, यादें और पुष्पांजलि जैसे आयोजनों ने मूर्धन्य कलाकारों की स्मृतियों को सम्मान देने के साथ नई प्रतिभाओं को मंच प्रदान किया है। हमारा लक्ष्य केवल लुप्त होती कलाओं को बचाना नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हें इतना समर्थ बनाना चाहिए कि वे आने वाली पीढ़ियों की आजीविका, पहचान और गौरव का आधार बन सकें।

उत्तर प्रदेश ने जिस प्रकार 'एक जनपद–एक उत्पाद' (ओ0डी0ओ0पी0) के माध्यम से स्थानीय उत्पादों को वैश्विक पहचान दिलाई है और 'एक जनपद–एक व्यंजन' (ओ0डी0ओ0सी0) की पहल को आगे बढ़ाया है। अब 'एक जनपद–एक कला' (ओ0डी0ओ0ए0) कार्यक्रम को भी प्राथमिकता के साथ आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। 'एक जनपद–एक उत्पाद' योजना विगत 09 वर्षों से उत्तर प्रदेश में अपनी विशिष्ट पहचान बना रही है। इसके माध्यम से प्रदेश का निर्यात 02 लाख करोड़ रुपये से ऊपर पहुंचाने में मदद मिली है। लाखों नौजवानों, कारीगरों और हस्तशिल्पियों के लिए यह योजना रोजगार और स्वरोजगार का महत्वपूर्ण माध्यम बनी है।

विगत दिनों एक समाचार पत्र समूह द्वारा आयोजित कार्यक्रम में उन्हें ओ0डी0ओ0सी0 पहल से जुड़ने का अवसर मिला। दुनिया की सबसे बड़ी खाद्य पदार्थ आपूर्ति करने वाली कम्पनियों में शामिल नेस्ले का वार्षिक कारोबार उत्तर प्रदेश सरकार के बजट के बराबर है। जब खाद्य पदार्थों के क्षेत्र में कार्यरत एक कम्पनी इतना बड़ा कारोबार कर सकती है तो उत्तर प्रदेश के पारम्परिक व्यंजनों को 'एक जनपद–एक व्यंजन' के माध्यम से वैश्विक बाजार तक पहुंचाकर इतनी बड़ी सम्भावनाएं क्यों नहीं विकसित की जा सकतीं।

पश्चिमी संगीत तात्कालिक रूप से लोगों को आकर्षित कर सकता है, लेकिन मानसिक शान्ति और साधना के आध्यात्मिक भाव को समझने के लिए भारतीय संगीत और पारम्परिक संगीत की अपनी विशिष्ट भूमिका है। इसलिए प्रदेश की कला परम्पराओं को आर्थिक गतिविधियों और सांस्कृतिक पहचान से जोड़ना आवश्यक है। संगीत नाटक अकादमी, भारतेंदु नाट्य अकादमी, बिरजू महाराज कथक संस्थान, राज्य ललित कला अकादमी तथा अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं के अध्यक्षों और पदाधिकारियों को प्रदेशभर के कलाकारों को एक मंच पर लाने का प्रयास करना चाहिए।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि प्रदेश के विभिन्न शहरों और जनपदों में प्रत्येक दिन अथवा कम से कम सप्ताह में एक दिन किसी उपयुक्त सार्वजनिक स्थान या चौराहे पर कलाकारों की प्रस्तुतियां आयोजित करने का प्रयास होना चाहिए। ऐसे स्थानों का चयन किया जाए जहां यातायात बाधित न हो, पर्याप्त जगह उपलब्ध हो और लोग आसानी से कलाकारों की प्रस्तुतियां देख एवं सुन सकें।

संस्कृति विभाग को ऐसे आयोजनों को प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे नवोदित कलाकारों को मंच मिलेगा और आमजन को अपनी स्थानीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा। कहीं नाट्य प्रस्तुति, कहीं संगीत, कहीं पारम्परिक वाद्य यंत्रों का प्रदर्शन और कहीं अन्य लोककलाओं की प्रस्तुति हो। प्रत्येक जनपद की विशिष्ट कला और उसकी पहचान को सामने लाने का प्रयास होना चाहिए। प्रदेश में इस क्षेत्र से जुड़े

अनेक अनुभवी कलाकार मौजूद हैं। उनका सहयोग लेकर इस अभियान को आगे बढ़ाया जा सकता है। इससे प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान को और अधिक समृद्ध दिशा मिलेगी।

आज दुनिया तेजी से बदल रही है। तकनीक, डिजिटल माध्यम और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने अभिव्यक्ति के नए अवसर खोले हैं। युवा कलाकारों को इन माध्यमों का उपयोग करना चाहिए, नए प्रयोग करने चाहिए और अपनी प्रतिभा को दुनिया के सामने प्रस्तुत करना चाहिए। लेकिन इस प्रक्रिया में अपनी मिट्टी की सुगंध, लोकधुन, गुरु की सीख और सांस्कृतिक जड़ों को कभी नहीं भूलना चाहिए। पहले लैंडलाइन फोन का उपयोग होता था, फिर स्मार्टफोन आ गया। तकनीक में बदलाव का अर्थ यह नहीं है कि हम अपने परिवार के साथ समय बिताना छोड़ दें अथवा माता–पिता से दूर हो जाएं। तकनीक का उद्देश्य जीवन को सहज बनाना है। वह जीवन का एक माध्यम हो सकती है, लेकिन जीवन का सब कुछ नहीं हो सकती। आज बच्चों ने लुप्तप्राय पारम्परिक वाद्य यंत्रों का वादन करके यह भरोसा भी दिलाया है कि हमारी सांस्कृतिक विरासत का भविष्य सुरक्षित हाथों में है।

मुख्यमंत्री जी ने उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी में मानव संसाधन की कमी को दूर करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इसके लिए एक बोर्ड अथवा समिति गठित कर चयन प्रक्रिया पूरी की जाए। चयनित अभ्यर्थियों को नियमानुसार वेटेज और आयु सीमा में छूट देने पर भी विचार किया जा सकता है, लेकिन रिक्त पद शीघ्र भरे जाएं। संस्थान की गतिविधियों और कार्यों को प्रभावी ढंग से संचालित करने के लिए मानव संसाधन की उपलब्धता सुनिश्चित करना आवश्यक है।

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष प्रो0 जयन्त खोत ने मुख्यमंत्री जी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अकादमी पुरस्कारों की धनराशि में वृद्धि के सम्बन्ध में अकादमी की ओर से मुख्यमंत्री जी को प्रस्ताव प्रेषित किया गया था, जिसे मुख्यमंत्री जी ने स्वीकृति प्रदान की है। मुख्यमंत्री जी के इस निर्णय से प्रदेश के कलाकारों में उत्साह एवं हर्ष का वातावरण है।

इस अवसर पर सलाहकार मुख्यमंत्री श्री अवनीश कुमार अवस्थी, अपर मुख्य सचिव पर्यटन एवं संस्कृति विभाग श्री अमृत अभिजात, उपाध्यक्ष श्रीमती विभा सिंह, निदेशक श्री राज कुमार व पद्मश्री पुरस्कार विजेता गायिका श्रीमती मालिनी अवस्थी सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

————————

PN-CM-UP Sangeet Natak Academy Sthapna Diwas-13 November, 2026